

६०९१०
Shri Raghunatha Temple MSS. Library,
JAMMU

No. २६६५

Title गणेश स्तोत्र

Author

Extent ५ पत्र Age

Subject स्तोत्र

गणेशस्तोत्र
नं. १७६५

6097
F-4
Complete
minor

जे. १७ वी क
मार्ग शस्त्रोत्तर
पु. पत्राली
मार्ग उत्तर



ग

१

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ उमागं
गजेकर्णवक्त्रं गणेशं भक्त
कंकणशोभितं धूमकेतुं ॥ गलिहा

रसुक्ताफलाशोभिर्वन्ते॥ नमो ज्ञा-
 नरूपंगणेशं नमस्ते॥ १॥ गणेशो-
 कदेतं शुभं सर्वकार्यं॥ स्मरन्सन्नाखं ज्ञान-
 दं सर्वसिद्धिं॥ मनश्चितितं कार्यसि-
 द्धम्वन्ते॥ नमो बुद्धिकोतंगणेशं न-

ग

२

२

मस्ते॥२॥ करे पुस्तकं विकटं विग्रह
 जं॥ चतुर्भिर्भजा मेकदंतैकवर्णं॥३॥
 दं दैव रूपं गणं सिद्धिनाथं॥ नमो मा
 लवंद्रं गणेशं नमस्ते॥३॥ सिरे सिंहं
 कुंकुमं हेमवर्णं॥ शुभं मोदकं पीय

ते विघ्ननाशं॥ महासंकटं छेदितं॥
 मुक्तेतं॥ नमो मौरिपुत्रगणेशं नमो॥
 स्ते॥ ध॥ यथापातकं छेदितं विघ्नना
 मे॥ तथा ध्यायते शंकरं पापनाशं य
 थैशं जितं सन्मखं शोकनाशं॥ नमो

ग
३

3

विन्नगजंगणेशं नमस्ते ॥ ५ ॥ सदा सर्वं
दायाय ते मे कदेतं ॥ सदा पूजितं सिं
हरं रक्तपुष्पं ॥ सदा अर्चितं चंदनं ऊं ऊं
मोक्तं ॥ सदा प्रीतिहवा गणेशं नमस्ते
नमो गौरिभ्रंगं सलोत्पन्नं नमो ॥

६

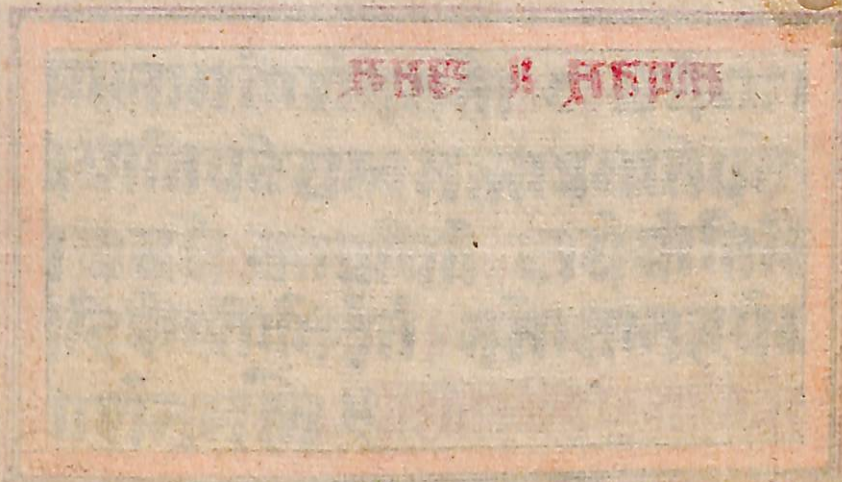
ज्ञानरूपेनमोसिद्धिपत्तं॥ नमो ध्याय
तेषु जिते सर्वसिद्धिं॥ नमो ज्ञानपत्तये
एतेनमस्ते॥ ॐ॥ सदा ध्यायते मंत्रपे सर्व
सिद्धिं॥ सदा भूषते रक्तपुष्पं च शोभं॥ स
दा वाहनं मूषकं पद्महस्तं सदा जय॥

ग
ध

मालागणेशं नमस्ते ॥ ८ ॥ भुजंगः ।
प्रयाति पटे यस्तु भक्ता प्रभाते पटे
तश्च वै ॥ काप्रवितं ॥ क्षयं यांति वि
त्रं दिशो शोभि वंतं ॥ नमो ज्ञान रूपं ग
णेशं नमस्ते ॥ ९ ॥ इति श्री गणेश स्तोत्रं ॥

सायतम् ॥ शुभम्

2/



23